OUR DEDICATED TEAM

EDITOR-IN-CHIEF
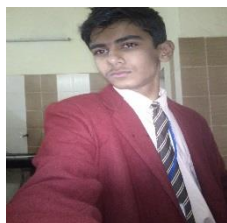
Akash Kumar is a student of class XI Science at Jamia Millia Islamia, New Delhi. He hails from Motihari in Bihar. Fondly called Man Of Sky by his friends, he is a passionate reader. Email- akash@jeevanmag.tk Facebook- www.facebook.com/akashmanofsky

EXICUTIVE EDITOR

Nandlal Mishra is pursuing B.Tech in Humanities (1st year) from Delhi University. He is basically from Samastipur in Bihar. He is fondly called Sumit by his friends. Email- nandlal@Jeevanmag.tk Facebookwww.facebook.com/nandlal.sumit

ASSOCIATE-EDITOR:
Anamika Sharma
(XII Science, Convent Of Jesus &Mary, Shimla)

Graphics: Anil Bhargava;
Design: Vikhyat & Aryan Raj
Coverpage source:http://latestforyouth.com/2014/02/happy-holi-2014-whatsapp-free-sms-download-holi-whatsapp-sms/

SUB-EDITORS

Kuldeep Kumar (XI Science, Jamia Millia Islamia,New Delhi)
Shahid Iqbal (XI Science, Jamia Millia Islamia)
Aminesh Aryan (XII Arts, Kendriya Vidyalaya, Kankarbagh,Patna)
Raghvendra Tripathi (B.Tech in I.T. (2st Yr.) Delhi University)
Kumar Shivam Mishra (BA(H) English, Commerce College, Patna)
Akshay Akash, Santosh kumar, Ashish suman (B.Tech in Humanities (1st Yr.) Delhi University)
Ankit Nayak (Xth , St. Joseph Public School, Samastipur)

PUBLIC RELATION OFFICERS

Aryan Raj (XI Science, Allen Career Institute, Kota)
Faisal Alam, Rishabh Amrit (XI Science, Shantiniketan Jubilee School,Motihari)
Aashutosh Pandey (XI Science, M.S. college, Motihari)
Ankit Kundan Dubey (B.A-Pol. Science, M.S. College, Motihari)
Alok Kumar Verma (XIIth Science, Lucent international school, Patna)
Radhesh Kumar (K. Singh Vision Classes, Patna)

Publisher- Blue Thunder Student Association (A VIPNET club), C/O Vijay Kr. Upadhyay, West of Dr. Shambhu Sharan, Belbanwa, Motihari-845401, Bihar. Facebook www.facebok.com/bluethunderstudentassociation
Delhi Contact- Akash kumar, iqbal Manzil, Jamia School Hostels, Jamia Millia islamia, New Delhi-25 Phone- +91 7827992817 or
Nandlal Mishra, V.K.R.V hostel, North Campus, University of Delhi, New Delhi Phone- +91 9631021440

नमस्ते !!

होली और हम

होली दरवाज़े पर खड़ी है पर फागुन की मस्ती शुरू हो चुकी है। सामाजिक एकता व समरसता का सन्देश देता यह त्यौहार भारतीय मानस के दिलों में विशिष्ट स्थान रखता है।

यह मौसम भी कुछ कुछ ऐसा ही होता है। ठंड जा चुकी होती है और लोग-बाग रजाइयों से निकल अपनी सुस्ती और आलस्य को विदा कर रहे होते हैं। फागुन के महीने में फिज़ा चंचल हो उठती है और मन-मयूर नाचने को उत्सुक। बच्चों में होली को लेकर दीवानगी देखते ही बनती है। हम बस इसी बात का इंतज़ार कर रहे होते हैं कि परीक्षाएं बीतें और फागुन की मस्ती में डूब जायें।

लोकसभा चुनावों के कारण इस बार होली भी चुनावी हो उठी है। नहीं नहीं, बेहतर यह कहना होगा कि इस बार होली से निकटता (समय के अन्तराल में) के कारण लोकतंत्र का उत्सव भी रंगीन हो चला है। सियासी गलियारों में सरगर्मी तेज हो चुकी है और नेतागण एक-दुसरे पर मुख की पिचकारी से आरोप रूपी रंगों की बौछार करने से बाज़ नहीं आ रहे। होली के अवसर पर अवसरवादी राजनीति प्रबल हो उठी है और नेता गिरगिट की तरह रंग बदलते फिर रहे हैं। 'राजनीति में कोई स्थाई दुश्मन नहीं होता' को चरितार्थ करते विरोधी पार्टियाँ गले लग रही हैं।

आप भी होली का मज़ा लीजिये और हाँ, दुसरों के जीवन में ख़ुशी के रंग भरना ना भूलियेगा ।

आपका अपना दोस्त

आकाश कुमार

(प्रमुख संपादक,जीवन मग)

काव्य-सुधा...

ख़ुद को जलाते चलना...

राह के पत्थर हटाते चलना
पथ पर फूल बिछाते चलना
अन्धेरे तो मिलेंगें ही मिलेंगें
पर तुम चिराग हो, ख़ुद को जलाते चलना |

लक्ष्य पथ पर निडर हो चलना
गिर ना जाओ संभल के चलना
समय के दुश्मन तो रोकेंगें ही रोकेंगें
पर तुम कमान हो, ख़ुद को तीर बनाते चलना |

आँधी में भी हो मगन चलना
भंवर में भी हो सबल चलना
सागर की लहरें तो डुबोयेंगीं ही डुबोयेंगीं
पर तम माँझी हो, ख़ुद को पतवार बनाते चलना ||

- **ब्रजमोहन** (आप हंसराज कॉलेज , दिल्ली विश्वविद्यालय मे प्राध्यापक एवं हरफ़नमौला व्यक्तित्व हैं|)

प्रिय........

-राघवेंद्र त्रिपाठी

इस अनजाने अपनेपन की प्रिय,
मैं नहीं चाहता कोई वर्णन, कोई परिभाषा हो ||
मेरे जीवन की सुप्त चेतना,
तेरे नयनो में होती विम्बित
मेरा पथ आलोकित करती,
तेरे संग की मीठी स्मृति ||

इससे ज्यादा इस सुप्त हृदय में
मैं नहीं चाहता बाकी कोई भी अभिलाषा हो ||
बस मेरे मानस अम्बर पर,
काले मेघों सी छा जाना ||
जीवन के मेरे मरू-थल में,
इक बार प्रिय तुम आ जाना ||

ये दग्ध हृदय अपना, प्रिय
मैं नहीं चाहता चिर विरही चातक प्यासा हो ||
मेरे मानस आले में तुम हो,
प्राणों में प्रिय तुम्ही शेष ||
है अंतिम बार यही इच्छा,
देखूँ जी भर कर तुम्हे निमेष||

हो ध्येय पूर्ण यह जीवन का
मैं नहीं चाहता बाकि कोई भी इच्छा, आशा हो ||
मौन अधर के प्रश्न सुन सको,
मूक नयन से प्रत्युत्तर दो प्रिय||
इस पथरीले पथ पर जीवन के,
आकर मुझको सम्बल दो प्रिय ||

भारत में फ़रवरी और मार्च महीने ऋतुराज़ बसंत की रंगीनियों और बहारों को समेटे हुए अत्यानंददायक एवं उत्सोवोनुकुल होता है| बसंत भारतीय काव्य साहित्य के मूल में रहा है| बसंत की शुरुआत बसंतपंचमी अर्थात सरस्वती पुजनोत्सव से तथा अंत रंग बिरंगी होली से होती है| प्रस्तुत हैं, क्रमशः इन दोनों अवसरों पर केंद्रित महाकवि निराला और नज़ीर अकबराबादी की ये कालजयी रचनाएँ....... (साभार- कविता-कोश)

देख बहारें होली की.....

जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की।
और दफ़ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की।
परियों के रंग दमकते हों तब देख बहारें होली की।
ख़ूम शीश-ए-जाम छलकते हों तब देख बहारें होली की।
महबूब नशे में छकते हो तब देख बहारें होली की।

हो नाच रंगीली परियों का, बैठे हों गुलरू रंग भरे
कुछ भीगी तानें होली की, कुछ नाज़-ओ-अदा के ढंग भरे
दिल फूले देख बहारों को, और कानों में अहंग भरे
कुछ तबले खड़कें रंग भरे, कुछ ऐश के दम मुंह चंग भरे
कुछ घुंगरू ताल छनकते हों, तब देख बहारें होली की

गुलज़ार खिलें हों परियों के और मजलिस की तैयारीहो।
कपड़ों पर रंग के छीटों से खुश रंग अजब गुलकारी हो।
मुँह लाल, गुलाबी आँखें हो और हाथों में पिचकारी हो।
उस रंग भरी पिचकारी को अंगिया पर तक कर मारी हो।
सीनों से रंग ढलकते हों तब देख बहारें होली की।

और एक तरफ़ दिल लेने को, महबूब भवइयों के लड़के,
हर आन घड़ी गत फिरते हों, कुछ घट घट के, कुछ बढ़ बढ़ के,
कुछ नाज़ जतावें लड़ लड़ के, कुछ होली गावें अड़ अड़ के,
कुछ लचके शोख़ कमर पतली, कुछ हाथ चले, कुछ तन फड़के,
कुछ काफ़िर नैन मटकते हों, तब देख बहारें होली की।।

ये धूम मची हो होली की, ऐश मज़े का झक्कड़ हो
उस खींचा खींची घसीटी पर, भड़वे खन्दी का फक़्कड़ हो
माजून, रबें, नाच, मज़ा और टिकियां, सुलफा कक्कड़ हो
लड़भिड़ के 'नज़ीर' भी निकला हो, कीचड़ में लत्थड़ पत्थड़ हो
जब ऐसे ऐश महकते हों, तब देख बहारें होली की।।

- नज़ीर अकबराबादी

वर दे, वीणावादिनि वर दे।

वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

वर दे, वीणावादिनि वर दे।

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

How life is

Be proud of who you are

Walk like a star. You have it all

Be proud of who you are

They will call you names

And think all you want is fame

Everyone has her own story

So it's not important to be same

You don't need to do what she did

Because you're not her

You go on your ways let her go in hers

Be proud of who you are

Walk like a star. You have it all

Be proud of who you are.

Love yourself

By: Anamika Sharma
2nd year diploma in Architecture G.P.S Sunder nagar (H.P.)

We Can Do Everything

Nothing is as strong
As we can't face it head long
Coming with flying colours
Giving them a ding dong
We can do everything

We have the power that we carry inside
We have the will, the passion,
The fight in our eyes
We have the ambition
We can do everything one more time

We can do anything
We can be anyone
We can be happy too
But we have to
Believe in the power of 'we'
As we can do everything

By: Shubham Bhardwaj (Student, MA Geography, 1st year, Delhi School of Economics.)

I CAN FLY EVEN IN CHAINS

A tree says many things…

Gazing at me is the azure sky
Blazing is the dawn so bright
Bedlam of chirrupings signify
Waiting within me is the zeal to fly

Sunbeams accompanying the pleasant warmth
Blessing the denizens with explicit light
Gentle breeze inspiring the mob
Acting as the elixir of life

When the dark friends hover around
Far from me and the other ones
We cease to be quiet and sound
As the enthralling flurry falls down

I love to sit in mother's lap
But the urge to fly never dies
When I see the denizens fly
The urge always magnifies

But I love the sun and the rain
And am habitual to resist the pain
As I can fall but never bend
When they turn violent again and again

I also speak of the greatest bane
When my 'tended to be' best friend
Turns into foe and
Avenges me for what I don't even know

I also speak of the greatest bane
When my 'tended to be' best friend
Turns into foe and
Avenges me for what I don't even know

I love him and help him in need
And never want to be mean
But perhaps he doesn't understand
Where I expect him to stand

The consequence of disturbing the equilibrium
He would never know
Till mother shows her fury
And change what she always does bestow

So I beseech you my friend
As your habitat is in your hands
Lest it should perish
And you will always be cursed for the blemish

However you try to give me pain
I will always be able to gain
The zeal to sing and celebrate
And the ability to fly even in chain….

Akshay Akash

(Student B.Tech. Humanities, Cluster Innovation Centre , DU)

व्यंग्य

घटकैती

बेटी की शादी के बाद चाचा जी को पता चल गया था की बेटी के पिता को कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं| उन्होंने तय किया की अपने बेटे की शादी में बेटी वाले पक्ष को तनिक भी परेशानी महसूस नहीं होने देंगे | वह शुभ घड़ी भी आ ही गई| लड़का ऊँचे खानदान का था और उसमे भी बैंक की सरकारी नौकरी इसलिए आगंतुकों की लाइन लगी रहती थी | आख़िरकार एक लड़की की तस्वीर पसंद की गई | मेरा बैठक तो माने दूसरों के विवाह तय करने के लिए ही बना था | वहीं एक बार फिर कुर्सियां मंगवाई गई, नया बेडसीट बिछाया गया, शर्बत फिर चाय और बिस्कुट आने के साथ ही माहौल गंभीर हो गया| तपाक से लड़की के पिता के बगल में बैठे दिन में सज्जन दिखने वाले पुरुष ने बिस्कुट खाते हुए कहा "समधी जी तो अब मुद्रा की बात हो जाय"| चाचा जी ने कहा की मुझे एक रूपया भी दहेज़ नहीं चहिये | अगर आपको फिर भी देना ही है तो, 11 रूपया, एक जनऊ, और एक टुक सुपारी दे दीजिये मै प्रेम से रख लूँगा | सभी लोग अवाक् हो कर चाचा को देखते ही रह गए | पड़ोस के लोगों को डर लग रहा था की बाराती के लिए भी न कहीं मना कर दे, कितने दिनों से अरमान लगा रखा है | बेटी वालों को लग रहा था कि किसी ने उन्हें क्लोरोमिंट कैंडी खिला दी है | उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था | लगभग दस मिनट तक सब खामोश बने रहे | एक लड़का आया और खाली गिलास और प्लेट लेकर चला गया | थोड़ा आगे जाते ही उसने प्लेट में बचे सारे बिस्कुट पॉकेट में डाल लिए | अचानक लड़की के पिता ने कहा "समधी जी घर पे गोरु को बछड़ा हुआ है , जल्दी जाना पड़ेगा सो अब आज्ञा दीजिये" मै फिर एक दो दिन में आकर आगे की बात फाइनल कर लूँगा | चाचा जी ने ख़ुशी–ख़ुशी सबको विदा किया| दो महीने बाद एक फ़ोन कर चाचा ने देरी का कारण जनना चाहा | लड़की के पिता ने कहा जरुर आपके लड़के में कोई खराबी होगी, नहीं तो कौन आजकल 11रूपया और जनऊ, सुपारी में शादी करता है| मैंने अपनी बेटी की शादी कर दी चार लाख रुपये और एक मोटर साईकल दिया है अपने दामाद को | चाचा तो अब बन गए चौधरी | कुछ दिन बाद नए लोग आये तो चाचा ने कहा 6 लाख रूपया और और एक अपाची लूँगा |अबकी बार ख़ुशी–ख़ुशी भैया की शादी हो गई | अचानक मुझे ख्याल आया की इनोवेशन के लिए अभी हमारा समाज तैयार नहीं हुआ है | ये केवल CLUSTER INNOVATION CENTRE में ही संभव है||

- संतोष

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र एवं चर्चित व्यंग्यकार हैं |)

Sunday Morning

Do you want one sided love?

It is not easy to define love, but as I think, love is a strong feeling of deep affection for somebody or something. However, in today's society one of our greatest mistakes is to miss the meaning of the word "love".

Our youngsters are habituated to gaze over opposite sex, is it love ?? They want one's love and this affection is essential for them or anyone else. Probably, everybody needs love and everybody has their own feelings. But staring at somebody or chasing somebody can't be considered as love — feeling is constitutive of love. If two hearts meet, it means their feelings must bump to each other.

It is love that gives us more and more pleasure and more and more grief. One sided love is very bothersome and spiny; it can baffle anyone. Now a days, this one sided love is most popular and I have too many examples of this.

Last Sunday, one of my best friend proposed a girl and I was also present there. When he said to her, "I like you, I don't want to hurt you but, heartily I love you"; ridiculously she replied, "I am already in an open relationship, we will remain friends, sorry"! After that, my friend is crying till now. Whenever he sees that girl, his eyes become tearful. He is crying because his feelings didn't collide with that or her. And nonetheless, he loves her.

“Dear friend, which type of love is this . . .??? Perhaps one sided . . .??? You couldn't understand her and proposed, now the result is in front of you. Dear friend, love is an ocean and you shouldn't put your legs in this water if you don't know how to swim over it. Please hold your tears and stop moaning, please! You should wait till next February.”

-Kumar Shivam Mishra

(Student, 1st year BA Hons. English, Commerce College, Patna)

A drawing by famous cartoonist Anil Bhargava

दो कवितायें....

-संजय शेफ़र्ड

(आप जाने-माने युवा कवि हैं तथा आजकल बीबीसी में कार्यरत हैं |)

मेरा प्रेम

बहुत ही अबोध हूँ
बहुत ही अबोध है
मेरा प्रेम
जो कहना चाहता हूँ
कह देता हूँ
तुम्हारे बिना कहे
तुम्हें सुन लेता हूँ
गलतियों पर डांटता
भूल पर फटकारता हूँ
तुम रूठती हो तो
मना लेता हूँ
मान जाती हो तो
जाने अनजाने
तुम्हें रुला देता हूँ
* * *
तुम्हारे आँसू
तुम्हारे दर्द
तुम्हारी तड़प
तुम्हारी भावनाएं
तुम्हारी संवेदनाएं
मुझमें बहती है
तुम्हारे हर दर्द
सहती और गहती हैं
हंसने की बारी आती है
संग-संग हँसता हूँ
रोने की बारी में
तुमसे छुप-छुपकर
रो लेता हूँ
* * *
हर पल
तुम्हें सुनता हूँ
तुम्हें ही सुनाता हूँ
खुशियों को हर बार
साझा कर लेता हूँ
दर्द को छुपाता हूँ
चाहूं तो साझा कर लूँ
दर्द के साथ आँसू भी
जानता हूँ
पी जाओगी
मेरे हर गम
तुम हँसते- हँसते
पर बांटू तो मैं बांटू कैसे ?
* * *
खुशियाँ सूद हैं
जीवन की
दर्द है पूंजी हमारे
हरे -भरे प्रेम उपवन की
कुछ दर्द उठे
कुछ फूल खिले
तुम प्रेयसी
चौका-बर्तन की
मैं प्रेमी घर आंगन का
तुम लिखती हो प्रेम
दर्द मिटाता हूं
मैं प्रेम पथिक
प्रेम के पथ पर चलकर।

पत्थर देह

देह पत्थर होती है
दर्द, तड़प, आंसू देह के
नहीं
संवेदनाओ, भावनाओं,
अहसासों के होते हैं

पहले संवेदनाएं मरती हैं
फिर भावनाएं
फिर अहसास
अंत में मरता है 'प्रेम'

देह तब भी पत्थर था,
अब भी पत्थर ही है |

(चित्रांकन - आर्यन राज)

Akshay Akash
14th Feb 2014

DIARY-NAAMA

EVERYTHING I DID..... ..... WAS FOR YOU
ONCE I USED TO BE WHAT I WAS....

Everything I did, was related to you…
Every step of cognition was for you…
Everything I enjoyed was due to you… and…
Every moment I lived for you…

I woke up early, trained hard and exercised…not only because it is a good habit…but to improve my fitness, so that I could be fit for every match at any moment…

I said prayer daily, closing my eyes, not only because I believe in God… but to improve my concentration, so that I could face the swinging ball in early overs…

I studied hard and stood first in class…not because I liked it. I did it so that my parents and teachers would allow me to play…to be with you…

I enjoyed my life because I wanted to come to you …be with you…my bat and ball…

I enjoyed to keep my mood good before the match…There was a sudden excitement every moment…that each and every action of mine would determine my performance in the game…

"Everything I did…was for you…my love…my life I am hapless as you would never be mine…but I am sure…we will be together again, I LOVE YOU…. And my every action is still related to the time when we were together….and I know "NO MOMENT IS PERMANENT IN LIFE…" I am alone… but believe one thing…"

Don't be disappointed when nobody stands with you. Just say, " I am thankful to those who left me because they taught me that – I CAN DO IT ALONE."

(Photo….Akshay Akash)

किस्सा कोताह...

-अमितेश कुमार

(लेखक दिल्ली विश्विद्यालय में प्रख्याता हैं | आप युवा लेखक और रंगमंच के जानकार हैं | आप रंग-विमर्श नामक अपने चर्चित ब्लॉग पर भी अतिसक्रिय हैं |)

यहाँ प्रस्तुत हैं आपकी कुछ पुरस्कृत लघुकथाएं...

भूतपूर्व मुखिया ने उचटती हुई निगाह दरवाजे पर डाली और खाली पाकर बाल्टी में खुद पानी भरने लगे, टायलेट खुला हुआ ही था...

सर! प्लेट लाईये ना मोमो निकाला जाए. जुनियर ने दो बार कहा. हां बाबु टाईम से पीएच.डी. ना जमा हो तोसीनियर ही प्लेट लायेगा...

एन.एस.डी. में पढ के क्या मिला? कार रूकती है और एक जुता बाहर निकलता है, उसे यहीं से निकला एक्टर साफ़ करता है, क्या एक्टिंग है!...

भूतपूर्व मुखिया ने उचटती हुई निगाह दरवाजे पर डाली और खाली पाकर बाल्टी में खुद पानी भरने लगे, टायलेट खुला हुआ ही था...

उनका हाथ झटकते हूए, अपना पल्लु संभाल कर कहा, हमलोग का इज्जत नहीं है का! बाबु साहेब!...

उसने रास्ते पर उसका नाम लिखा, कोचिंग जाते हुए बड़े अक्षरो में अपना नाम देख, वह उस पर पैर रखते हुए बढ़ गई और मन में कहा बेवकुफ़!...

आप चाहें तो हमारे बर्थ में आ कर बैठ सकती हैं, नहीं ठीक है... बहुत अकड़ु है सर..जाने दो, इसलिये कहा था ना आजकल किसी की भलाई मत करो...

टेलीविजन पर सत्या फ़िल्म चल रही थी, अंत आते आते वह फूट फूट कर रोने लगा, कल उसके आत्मसमर्पण का दिन था...

बलराम बाबा ने गन्ना लगा कर गांव भर के लड़कों को चौपट कर दिया है..चल निकल, भाग इहां से..टांगे तोड़ देंगे...बित भर का जन्त आ काम...

उसने देखा एस.पी. साहेब के पीछे मंच पर खड़े लोगो का चेहरा वहीं था, इन्हें वह अपने होश से देख रहा था, अधिकारी बदल जाते थे लेकिन चमचे...

लघुकथा ... ***नंदलाल***

पागल

उस पागलख़ाने के उन दोनों पागलों का बस एक ही काम था - सुबह से शाम तक तकरीबन ढाई सौ गज़ की दूरी पर खड़े दो विशाल पेड़ों के बीच परस्पर हाथ में हाथ डाले संजीदे चेहरे से गहरी फिलोसोफ़िकल बातें करते हुए चहलकदमी करना | एक तीसरा पागल जो उतना गंभीर नहीं था चुपचाप उनका अनुसरण कर रहा था|

उस दिन मुझसे रहा ना गया और मैं उनकी गंभीरता को समझने हेतु उनदोनों की तरफ़ अनिमेष देखने लगा | तभी तीसरा मेरी तरफ इशारा करते हुए बोल पड़ा-क्या देखते हो उन्हें, वे पागल हैं, पागल|

मुशायरा

ग़ज़ल

वो पहले ख्व़ाब का दरवाज़ा खटखटाता है,
फिर आसमान के दरिया में डूब जाता है|

मैं उसको ग़ज़लों की मानिंद जीने लगता हूँ,
वो हर्फ़ हर्फ़ मेरे दिल में छटपटाता है|

सफ़र उजालों का करता है मेरे साथ शुरू,
ये आफ़ताब की क़िस्मत है,डूब जाता है|

तमाम शहर है सहरा घनी उदासी का
इसी उदासी में गुलरेज़ गुनगुनाता है |

-गुलरेज़ शहज़ाद

आजकल

अरे ये गूँगे!! ये जवाब मांगने लगे हैं आजकल,
जरा देखो इन्हें इंकलाब मांगने लगे हैं आजकल |

अमां!! ये भी क्या खूब हिकामत है जुगनुओ की,
कि मुकाबिल आफ़ताब मांगने लगे हैं आजकल |

क्या तुम भी सुन रहे हो ये कानाफूसी,ये आवाजें,
सुना कि वे लोग हिसाब मांगने लगे हैं आजकल |

न जाने क्या हुआ इस कौम को कि अचानक सारे,
लुटे, तफ्तीशे-इन्तिहाब मांगने लगे हैं आजकल |

जो कल तक टुकड़ों की तरफदारी में थे,वे ही सब,
ये क्या हुआ, वे इत्तिहाद मांगने लगे हैं आजकल|

आपकी किस्मतों में जो कुछ भी हिस्सा उनका हैं,
अपना हक वे खानाखराब मांगने लगे हैं
आजकल ||

- राघवेंद्र त्रिपाठी

(छात्र, बी.टेक. आइ.टी. क्लस्टर इनोवेशन सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय)

मुर्खदिवस का औचित्य

प्रत्येक वर्ष एक अप्रैल को लगभग आधी से अधिक दुनिया मेँ फूल्स डे यानि मुर्ख दिवस मनाया जाता है| वेलेँटाइन डे की ही भांति हम इसे सहज ही पश्चिमी दुनिया की भेँट मान कर हेय दृष्टि से देखते हैँ और फालतू की चीज समझ बैठे हैँ| यदि हम इसके तह तक जाने की कोशिश करेँ तो पता चलेगा कि यह हरेक सभ्यता मेँ किसी न किसी रुप मेँ मौजूद है| सामान्यतः इस दिन लोग एक दूसरे को मजाकिया धोखे देते हैँ, ठगते हैँ, ताने कसते हैँ, चुटकुले कहते सुनते हैँ और हँसी-मजाक करते हैँ | भारत मेँ इसका उत्साह सिर्फ बच्चोँ मेँ दिखता है जबकि इसकी अधिक जरुरत बड़ोँ को है| अच्छा रहेगा कि इस वर्ष हम इसके औचित्य की पड़ताल करेँ और होली -दिवाली, ईद और क्रिसमस की तरह अपने जीवन मेँ स्वीकार करेँ|

मुर्ख दिवस का प्रथम लिखित प्रमाण चाउसर नामक एक यूरोपीय लेखक द्वारा 1392 मेँ लिखी कहानी 'डॅन्स प्राइस्टस् टेल' मेँ मिलता है | इस कहानी मेँ एक धूर्त लोमड़ी एक मुर्गे को बुद्धू बनाते हुए अपनी ठगी के जाल मेँ फँसाकर अंत मेँ सफाचट कर जाती है | लेखक इस घटना के दिन को उलझाकर कुछ यूँ व्यक्त करता है-यह घटना उस महीने (सायन मार्च) के शुरुआत के 32 दिनोँ के बाद की है, जिसमेँ नये साल की शुरुआत होती है और जिसमेँ भगवान ने पहले इंसान को पैदा किया था | कुल मिलाकर यह दिन 1 अप्रैल ही निकलता है | वहीँ क्रमशः सन् 1508 एवं 1539 मेँ फ्रेँच और फ्लेमिश कवियोँ इलाय डि अमीरवल तथा एडवर्ड डि डेन की हास्य कविताओँ मेँ भी इसकी चर्चा मिलती है| मुर्ख दिवस के प्रारंभ की सर्वाधिक मान्य कहानी भी काफी दिलचस्प है| सन् 1500 से पुर्व नये साल की शुरुआत 25 मार्च से एक सप्ताह तक जश्न-ए-उत्सव मनाया जाता था जो एक अप्रैल को बड़े धूम धाम से समाप्त होता था | लेकिन 1500 ईस्वी के बाद ग्रेगोरियन कलैँडर के प्रचलन मेँ आ जाने से शिक्षित और जानकार लोगोँ ने 1 जनवरी को नववर्ष उत्सव मनाना शुरु कर दिया | परंतु तब भी यूरोप की एक बड़ी अनभिज्ञ आबादी मर्च-अप्रैल मेँ ही उत्सव मनाती आ रही थी | जब यह उत्सव एक अप्रैल को अपने अंत को पहूँचता तो जानकार लोग उन्हेँ हकीकत बताकर उनका मखौल उड़ाते | यह सिलसिला कई वर्षोँ तक जारी रहा और फूल्स डे नाम से एक उत्सव बन गया | मुर्खदिवस के शुरुआत की कहानियोँ व इतिहासकारोँ के विचारोँ से निकलता है कि यह नये साल के आगमन को मनाने का पुराना अंदाज था जो आज नये स्वरुप मेँ विद्यमान है |

नये ईरानी साल की शुरुआत के 13वेँ दिन लोग एक दूसरे से हँसी मजाक करते हुए जश्न मनाते हैँ जिसे वहाँ सिजदाह बेदर कहा जाता है| अंग्रेजी कैलेँडर से यह 1 या 2 अप्रैल का दिन होता है| लोगोँ का मानना है कि यह परंपरा ईसा के जन्म के पहले से जारी है| फ्रांस, इटली एवं बेल्जियम मेँ एक अप्रैल को पेसकी-डि-अप्रिल - (अप्रैल फिश) मनाया जाता है|

इस दिन लोग एक दूसरे की पीठ पर मछलीनुमा स्टीकर चिपकाकर हँसी मजाक करते हैं तथा लतीफ़े कहते सुनते हैं|
पोलैंड और तुर्की में प्रीमा (एक) अप्रैल जोक्स, हँसी- मजाक एवं मजाकिया धोखों से भरपूर दिन माना जाता है| कभी कभी तो मीडिया भी लोगों को ठगती नजर आती है | स्कॉटलैंड में इस दिन को हंट- दि- गॉउक डे कहा जाता है| स्वीडन और डेनमार्क में एक मई को मेज़-कैट जोकिंग डे अर्थात मजाकिया दिन के रुप में मनाने की परंपरा रही है | स्पेन में यह दिन 28दिसंबर को मनाया जाता है | इसी को रोमन सभ्यता में 15वीं -16वीं सदी में फीस्ट ऑफ फूल्स के रुप में मनाया जाता था | चीन और अमेरिकी देशों में भी मुर्ख दिवस लंबे समय से एक अप्रैल को मनाया जाता रहा है | यह दिन और उत्सव हमें हँसी मजाक के साथ साथ महान हास्य प्रतिभाओं को भी स्मरण करने का मौका प्रदान करती है|
संयोग से जिस अप्रैल महीने की पहली तारीख को मुर्ख दिवस मनाया जाता है, उसी महीने की 16 तारीख को महान हास्य कलाकार चार्ली चैप्लिन का भी जन्म हूआ था | इस अभिनेता फिल्मकार ने अपने जीवन चरित्र एवं सिनेमा के माध्यम से 'अपने दुखों की कीमत पर दूसरों को ख़ुश करने' के अनमोल मानवीय सिद्धांत को स्थापित किया जिसे पूरे विश्व ने सामाजिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषमता से दूर रहकर एक समान लोकतांत्रिक भाव से स्वीकार किया | अपने फिल्मों में चार्ली नायक है और जोकर भी | इससे पहले नायक के अपने उपर हँसने-हँसाने का प्रचलन नहीं था | उन्होंने हास्य एवं करुणा के अद्भुत सामंजस्य से नये कला सिद्धांत को जन्म दिया जो पहले के किसी संस्कृति या साहित्य में नहीं मिलता है | वह हर 10वें सैकेंड में अपने को संकट में घिरा पाता है, अपने को मुर्ख बनाता है, धोखा खाता है, गिरता है.... संभलता हैं... अजीबो-गरीब हरकतें करता है और लोग हँस देते हैं | वस्तुतः वह एक जोकर है कॉमेडियन नहीं | जोकर और कॉमेडियन में फर्क है | जोकर हास्य और करुणा का मिश्रण होता है | उसमें रुलाने और हँसाने दोनों की क्षमता होती है , मगर वह रोता ख़ुद है जबकि औरों को हँसाता है | जोकर बातों से कम अपने संकट में घिरे हालात, दयनीय चेहरा और लड़खड़ाते हरकतों से ऐसा करता है | उसकी ख़ुद की हँसी बनावटी होती है| कॉमेडियन इन अर्थों में जोकर से बिल्कुल भिन्न होतेहैं | बस्टर कीटन चार्ली से

बस्टर कीटन चार्ली से बड़ी हास्य प्रतिभा थे किंतु वे कॉमेडियन अधिक थे जोकर कम; सो उतने लोकप्रिय और प्रभावी न हो सके जितने कि चैप्लिन |

बड़ी हास्य प्रतिभा थे किंतु वे कॉमेडियन अधिक थे जोकर कम ; सो उतने लोकप्रिय और प्रभावी न हो सके जितने कि चैप्लिन | विष्णु खरे अपनी एक फिल्मी समीक्षा में कुछ यूँ लिखते हैं- “चार्ली को जिसने भी- जहाँ भी देखा, उसमें 'हम' को पाया | यही वजह है कि आम आदमी को अक्सर और सहज भाव में ही चैप्लिन की उपमा दे दी जातीहै क्योंकि हम सभी सुपरमैन नहीं हो सकते हैं| दरअसल मनुष्य स्वयं नियति का विदूषक, क्लाउन या जोकर है | उनकी व्यापक जन स्वीकृति के कारण ही कभी गांधी और नेहरु ने भी उनका सानिध्य चाहा था | राजकपूर ने नकल के आरोपों की परवाह किये बगैर चैप्लिन का भारतीयकरण कर डाला | आवारा ,श्री 420 और मेरा नाम जोकर जैसी फिल्में नायकों के अपने पर हँसकर जगको हँसाने के सिद्धांत पर आधारित हैं |”

बेहतर होगा कि हम चैप्लिन के सिद्धांत के अनुयायी बनें; इस दिन दूसरों को चिढ़ाने- बेवकूफ बनाने और धोखा देने की बजाय खुद पर हँस कर जग को हँसायें तथा औरों में भी यह माद्दा पैदा करें |

भारत की संस्कृति में एकमात्र होली का त्योहार ही हमें जानबूझ कर स्वयं को हास्यास्पद बनाने का अवसर प्रदान करती है | संयोग से यह भी मुर्ख दिवस के आसपास ही मनाया जाता है तथा इसका और भी सहज एवं मुखर रुप है| फिर कैसे न कहें कि मुर्ख दिवस एक विश्वव्यापी उत्सव है| बसंत ऋतु में इसके मनाये जाने के पीछे कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि प्रकृति हमें शरद-बसंत परिवर्तन द्वारा मुर्ख बनाती है | सच्चाई जो भी हो किंतु यह दिन हमें इस अशांत तथा तनावग्रस्त संसार में खुद को हँसने-हँसाने और तरोताजा होने का मौका प्रदान करता है| यह जातीय एवं मजहबी संकीर्णताओं से मुक्त उत्सव है जो हमारी लोकतांत्रिक भावनाओं को

और अधिक बढावा देगा | बेहतर होगा कि हम चैप्लिन के सिद्धांत के अनुयायी बनें; इस दिन दूसरों को चिढ़ाने- बेवकूफ बनाने और धोखा देने की बजाय खुद पर हँस कर जग को हँसायें तथा औरों में भी यह माद्दा पैदा करें|

फिल्म मेरा नाम जोकर का यह गीत तो आपको याद ही होगा- अपने पे हँस के जग को हँसाया, बन के तमाशा मेले में आया, हिंदू न मुस्लिम पूरब न पश्चिम,
मजहब है अपना हँसना हँसाना, कहता है जोकर सारा ज़माना......

यकीन जानिये, इस लेख में मैंने आपको कहीं नहीं ठगा है|

-नंदलाल

हँसी दिल्लगी

बच गया मैं -नंदलाल

बीते दिनों भोपाल से लौट रहा था । सफर लंबा था सो मन बहलाने को ए.सी. थ्री टियर के अभिन्न , अनुरागी और श्रवनधैर्य-धर्मी माननीय मित्रवर से यादृच्छया गप्पें मारे जा रहा था| सामने वाले बर्थ पर दो प्रौढ आसन लगाये थे । संस्कार से यूपी के ब्राहमण प्रतीत होते थे....वे भी आपस में ओष्ट कंपन किये जा रहे थे । बीच बीच में हमारी बातों पर भी कान डाल देते फलस्वरुप कभी कभी क्षणिक शांति छा जाती और मैं संकोचवश ढीला पर जाता था | दरम्यां इसके संदर्भ और प्रसंगवश मैं बोल गया - चौबे चले थे छब्बे बनने दूबे बनकर लौटे | इतना कहना था कि दोनों व्यक्ति मुझ पर बाज़ की भांति यकायक टूट पड़े | बड़ी मुश्किल से अपरिचित शुभचिंतक यात्री मित्रों (भगवान उनकी जीवनयात्रा मंगलमय करें) के हस्तेपक्ष की वज़ह से ही आज आपसे रुबरु हूँ | बचकर पता चाला वे दोनों क्रमशः उमाकाँत दूबे और दीनानाथ चौबे थे । उस दिन से कान पर हाथ रखा है, जातिवादी लोकोक्तियों एवं मुहावरों का इस्तेमाल भूलवश भी नहीं करुँगा....यथा (अंतिम बार कह रहा हूँ) धोबी का गदहा न घर का न घाट का , कहाँ राजा भोज और कहाँ गँगू तेली.... आदि आदि...

JOKES

Titanic was sinking.
Santa: How much the earth is far from here?
Banta: 1 kilo meter.
Santa jumped into the sea and asked again: "...In which direction?"
Banta: Downwards!

This dog, is dog, a dog, good dog, way dog, to dog, keep dog, an dog, idiot dog, busy dog, for dog, 20 dog, seconds dog! .....Now read without the word dog.

by--Aryan Raj

अध्यापक - अच्छा आर्यन ये बताओ, पाज़ामा वचन के हिसाब से क्या है?
आर्यन - जी उपर से एकवचन और नीचे से बहुवचन |

संतालाल ने बन्तालाल से - यार तुने दारू पीना फिर क्यों शुरु कर दिया?
बन्तालाल - समाजसेवा के लिए |
संतालाल - मतलब,कुछ समझा नहीं?
बन्तालाल - जब मैंने दारू पीना बंद कर दिया तो मैंने उन सभी दारू फैक्ट्री के मजदूर , उनके बीवी-बच्चो के बारे में सोचा , तो मेरी आँखे भर आई और उसी समय मैंने फैसला किया की अब से मैं रोज दारू पिऊंगा , और वो भी अलग-अलग ब्रांड की |

Book Review- Once upon a monsoon time By Ruskin Bond
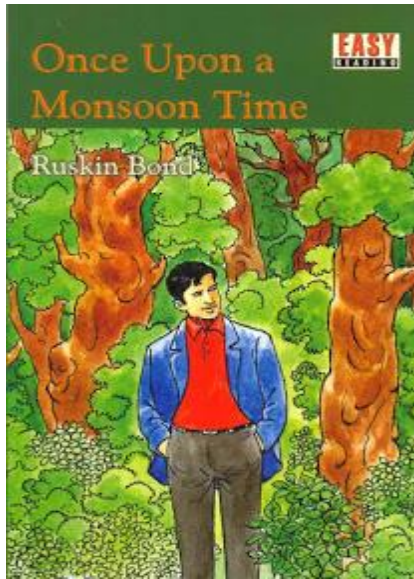
-Akash Kumar

Book's name- Once upon a monsoon time
Author- Ruskin Bond
Publisher- Orient Blackswan
Price- 48 only
Genre- Autobiography/Short novel
Rating points- 9/10

The Book is about the sweet & salty childhood experiences of the author. There is no imagination but a superb writing skill is involved which can be felt by the reader throughout the book. The story revolves round the author & his father.

The author spends his early childhood in Kathiawar, where his father serves as a school teacher. He uses to teach in the school especially for Raja's & his relatives' children. He has been given a grand bungalow, along with several servants including 'Dukhi', the gardener. Instead of his mother, he has an ayah to look after him. In the midway, little Ruskin has to go to 'Dehra'; for his father's appointment in the Royal Air Force. Now, his father resides in Delhi but in order to see Ruskin, he regularly pays a visit to Dehra. In the rains, Ruskin & his father go to a riverine island with plant saplings. They plant many trees there, imagining of a green paradise.

After a while, the story takes a sudden twist when Ruskin's father dies of Malaria in Delhi. He & his grandmother have to leave Dehra as his father has left no money behind him. They sell their house to an emerging doctor.

After 20 years of this incident, mature Ruskin comes to Dehra especially to see the green paradise, he & his father had planted. He is content & merry to see the green paradise as a home of many animals. He realizes that his father's dream has come true.

The story is written in such an interesting way that not an iota of boredom is felt while reading & believe me, the ride is thrilling....

Coconut and monkey

O coconut! Why did you fall?-The monkey overthrowed me.
O monkey! Why did you overthrow the coconut?-My wife did not give me food.
O monkey's wife! Why did you not give monkey food?-My child was crying.
O child! Why were you crying?-Dog was barking at me.
O dog! Why were you barking at the child?-I am always barking. …… Ha-Ha-Ha.

- Aryan kumar
Class 6, Kendriya vidyalaya, Motihari

Karan Negi, Shimla

Ashish Suman, Abhinav Sharma; Ajanta-Ellora

Vikhyat Kumar, Samastipur

Photos of the month….

Aminesh Aryan, Patna

Puzzle....

A girl went to a shop and brought items of worth Rs 200 and gave a note of Rs1000 to the shopkeeper. Shopkeeper took change from another shopkeeper and returned Rs 800 to the girl. After some time 2nd shopkeeper came and demanded Rs1000 by saying that note of Rs 1000 was fake. First shopkeeper gave Rs 1000 to him. Now you have to answer that what was the loss of 1st shopkeeper? - Ashish Suman

Answer will be published in next issue.

CONGRATULATIONS!....

Nandlal Mishra and Santosh Kumar have won 3rd prize for poetry and extempore speech respectively at an intercollege meet in Bharati College, University Of Delhi.

Write Haiku Compatition…

A **Haiku in English** is a short poem of 3 lines which uses imagistic language to convey the essence of an experience of nature or the season intuitively linked to the human condition. It is a development of the Japanese haiku poetic form in the English language.

Jeevan Mag invites Haikus from readers on the toipc "Life". Best 3 Haikus will be published in next issue.

Please send your intries with your photograph on the following email id till 10 April:

akash@jeevanmag.tk

विविधा.. -Ankit Nayak

AMAZING FACTS. . .

1. *Rabindranath Tagore is the only one poet of the world who have written the national anthems of two nations i.e. Jan gan man of India and Amar Sonar Bangla of Bangladesh.*

2. *An average person walks the distance equivalent of twice the circumference of earth in his lifetime.*

3. *A cow gives nearly 200,000 glasses of milk in her lifetime.*

4. *A chimpanzee can learn to recognize itself in a mirror but monkeys can't.*

5. *The largest English word having meaningful mirror image is 'stressed' or 'desserts'.*

6. *Right handed people live, on average, Americans on the average eat 18 acres of pizza every day.*

7. *Americans and Europeans spend US $17 billion per year on food for their pets.*

8. *India won the ICC world cup 1983 and 2011 coincidentally, in both the years team was in Group B, played semifinals on Wednesday and the final match on Saturday.*

9. *The ICC World cup 1992 was the first world cup to feature floodlights, white balls and colored team uniforms.*

10. *Rabindranath Tagore is the only one poet of the world who have written the national anthems of two nations i.e. Jan gan man of India and Amar Sonar Bangla of Bangladesh.*

बदलते समाज में प्रेम

समाज बदल रहा है, लोग बदल रहे हैं खाना-पीना से लेकर रहन-सहन में भी परिवर्तन साफ़ नज़र आ रहा है| कहीं ये बदलाव काफी तेज है तो कहीं क्रमिक, किन्तु देश बदल रहा है| देश अग्रसर है नयी मंज़िल की ओर जहाँ रूढ़िवादी विचारों की कोई जगह नहीं होगी न ही जगह होगी ऊँच-नीच, छोटे-बड़े और महिला-पुरुष विभेदों की |

हमें अपनी परम्पराओं से सीख लेते हुए नए समाज के निर्माण में अपने विवेक का भी इस्तेमाल करना चाहिए | हम आये दिन देखते-सुनते हैं कि प्रेमी जोड़ों को आग में जला दिया जाता है, तो कभी पीटने से उनकी जान निकल जाती है| आखिर क्या कारण है कि समाज प्रेमिओं को साथ नहीं देखना चाहता| आखिर एक न एक दिन तो उसे शादी के बन्धनों में तो बंधना ही है फिर क्यों हम उन युवाओं की जान लेने पर उतारू हो जाते हैं? क्या उन्होंने कोई गलती की? मैं तो नहीं समझता और न ही हमारे देश का कानून ही इसे गलत समझता है (अगर लड़का 21 साल और लड़की 18 साल से ज्यादा की हो)| आखिर ज़िंदगी तो उन दोनों को ही गुजारनी है फिर हम कौन होते हैं उन्हें परेशान करने वाले, हाँ लोग सलाह दे सकते हैं लेकिन अंतिम फैसला तो उन्हें ही करना चाहिए | कभी हमारा समाज किसी लड़के या लड़की को ऐसे जीवन साथी चुन देता है जिसके साथ ज़िंदगी गुजारना नरक से भी बदतर होता है | हमारे समाज में बहुत सी खामियां हैं जिसे दूर करने की जरूरत है, इससे पहले भी सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ थी, आज दहेज़ और जाति प्रथा जैसी चुनौतियां हमारे सामने हैं| ये हमारे समाज को दीमक की तरह खा रही हैं| कितने ही मासूम इनकी भेंट चढ़ जाते हैं| हम इसी देश में राधा-कृष्ण की पूजा करते हैं, नल-दमयंती की प्रेम-गाथा गाते हैं किन्तु कितने ही जोड़ी को तड़पाते भी हैं|

अगर हम प्रेमी जोड़ों के उत्पीडन की बात करते हैं तो खाप पंचायत के बिना बात अधुरी ही रह जायेगी| कभी उनके फरमान आते हैं कि अमुक जोड़े को 20 साल तक गाँव में घुसने की इज़ाज़त नहीं है तो कभी उनका हुक्का पानी बंद कर दिया जाता है| सुप्रीम कोर्ट का भी मानना है की प्रेम विवाह जैसी चीज़ें ही देश को टूटने से बचा रही हैं तथा जाति प्रथा और दहेज़ प्रथा को ख़त्म करने में अहम् भूमिका निभा रही हैं|

हम फिल्मों में तो दो प्रेमी के मिलन को बहुत खुशी से स्वीकार करते हैं किन्तु समाज में इसे होने से रोकते हैं| कोई खास एक आदमी प्रेम विवाह को बुरा नहीं मानता है बल्कि वह जैसे ही समाज की दृष्टि से देखता है, इसे बुरा समझ बैठता है | प्रेम विवाह करने पर लड़के की जान पर बन आती है कि उसने अमुक गाँव की लड़की की इज्जत पर हाथ रखा है, अरे उसने तो उसके साथ इज्जत के साथ शादी की है, लड़की के मर्जी से शादी की है...आदि आदि| इन खाप पंचायतों को इन मासूमों को प्रतारित करने में तो बहुत मज़ा आता है लेकिन हमने तो अभी तक कभी ये नहीं सुना कि कभी इन्होंने किसी बलात्कारी के खिलाफ कोई फरमान निकाला हो, उसे समाज से बहिस्कृत किया हो| यह क्या समाज के लिए अच्छा है जो आपके मुंह से बोल भी नहीं फूटती| आखिर में मैं यही कहना चाहूँगा की जब पानी किसी जगह पर स्थिर हो जाता है तो बहुत सारी गंदगी भर जाती है और यही बात समाज के सन्दर्भ में भी लागू होता है | सो समाज को समय के हिसाब से सही और गलत में फर्क करते हुए बदलते रहना चाहिए |

--आशीष सुमन (लेखक क्लस्टर इनोवेसन सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय में बी.टेक. मानविकी के छात्र हैं|)

CLUB ACTIVITIES

पिछले महीने जीवन मग टीम के सदस्य अमिनेश आर्यन ने गृह मंत्रालय में आर.टी.आई दायर करते हुए सुभाष चंद्र बोस को भारत रत्न देकर फिर लौटाने का कारण पूछा तो जवाब कुछ यूँ आया ......पढ़ें इस चिट्ठी में..

No. 24/44/2014-Public
Government of India/ Bharat Sarkar
Ministry of Home Affairs/ Grih Mantralaya
****

North Block, New Delhi.
Dated the [illegible] January, 2014

To,

Shri Aminesh Kumar,
C/o Awadhesh Kumar,
At-Karnpura, P.O.- Jadhua,
Vaishali, Hajipur,
Bihar-844102.

Subject: Information under Right to Information Act, 2005.

Please refer to your application dated 26.11.2013, forwarded by President's Secretariat under the Right to Information Act, 2005. The information sought by you is as under:

1. In deference to the sentiments expressed by the public and by the members of the family of Netaji Subhash Chandra Bose, The Government of India did not confer Award of Bharat Ratna upon Netaji Subhash Chandra Bose.
2. 'Bharat Ratna', the highest civilian award of the country, is awarded in recognition of exceptional service/performance of the highest order in any field of human endeavor. In terms of extant practice, the Prime Minister makes the recommendations for Bharat Ratna Award to the President and the names for the Bharat Ratna award are announced by the President's Secretariat after obtaining the approval of President.

2. Appeal if any, may be made under Section 19(1) of the RTI Act to Shri Satpal Chouhan, Joint Secretary (Admn.), Room no. 194, Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-110001, the Appellate Authority, within 30 days.

(Shyamala Mohan)
Director& CPIO

चलते चलते ...
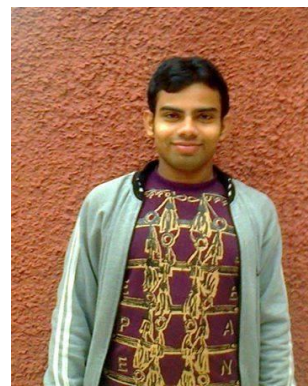
सतपुड़ा के घने जंगलों से भवानी के बोल और गोंड के ढोल गूंज उठे हैं....जब कि होली पास आती,सरसराती घास गाती, और महुए से लपकती, मत्त करती बास आती, गूंज उठते ढोल इनके,गीत इनके, बोल इनके.....और बच्चन का ये अलमस्त गीत – होली खेले रघुबीरा अबध में....जिधर देखिये नज़रों में एक से बढ़ कर एक अलौकिक रंग घुले-मिले छाये हैं | आप सबको जीवन मग की ओर से इस पवित्र त्यौहार कि हार्दिक शुभकामनाएं | आप सभी प्यार, ख़ुशी और इंसानियत के रंग एक दूजे को लगायें और कोशिश करें कि यही रंग बचे रहें बाक़ी उतर जाएं |

जब ये लेख लिखने बैठा हूँ पुरे देश में लोकसभा चुनाव के अच्छे भद्दे विविध रंगों के दर्शन हो रहे हैं | दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का यह उत्सव सफल हो और देश का भविष्य भले लोंगों के हाथ जाये इसके लिए इस बार हम सब को मिल कर प्रयत्न करना है| आपसबों से अपील है कि आप भी मतदान में भाग लें और वंचितों को भी इसमें शामिल करें| शायद देशहित में इस काम से हमें गुरेज़ नहीं होगा|

एक ओर जहाँ सचिन को इस पीढ़ी के सबसे बड़े क्रिकेटर का तमगा प्रदान किया जा रहा है वहीँ दूसरी ओर मलेशिया का खोया विमान एक रहस्य बना हूआ है| विमान का अब तक कोई पता न लगा पाना हमारी तकनीकी विफलता का परिणाम है|

दोस्तों, इनदिनों रंगों-बहारों के मौसम बसंत के साथ परीक्षाओं का भी दौर चल रहा है| सभी प्रतिभागियों को बोर्ड और प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ साथ बेहतर परीक्षा परिणामों की हार्दिक शुभकामनाएँ|

जीवन मग सदस्यों कि परीक्षा तैयारियों की व्यस्तताओं के मद्देनज़र फरवरी अंक प्रकाशित नहीं कर क्षमाप्रार्थी हूँ| यह संयुक्त रूप से फरवरी-मार्च अंक है| आशा है आपको पसंद आएगा| हाँ, आपकी प्रशंसाओं सुझावों एवं शिकयतों का इंतज़ार रहेगा| अपने विचारों से ज़रूर रूबरू करने की कृपा करें|

अगले अंक तक......नमस्कार!

-नंदलाल

प्रबंध संपादक जीवन

HAPPY HOLY.....

(http://jeevanmag.blogspot.in/)

An initiative by

Blue Thunder Student Association

Affiliated to VIPNET (V0541305)